Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 4; Issue 3; 2026; Page No. 211-216

Received: 04-03-2026
Accepted: 10-04-2026
Published: 13-05-2026

21वीं सदी के संदर्भ में प्रेमचंद की नारी और दलित अस्मिता का अध्ययन

[1]Mamta Rani and [2]Dr. Navneeta Bhatia

[1]Research Scholar, Department of Hindi, Monad University, Hapur, Uttar Pradesh, India
[2]Assosciate Professor, Department of Hindi, Monad University, Hapur, Uttar Pradesh, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21962564

Corresponding Author: Mamta Rani

सारांश

प्रेमचन्द अपने उपन्यास और कहानियों में नारियों के प्रति दयावान दिख रहे हैं और दिखे भी क्यों न पुरुषोंकी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण नारियाँ हमेशा से शोषण की शिकार होती रही हैं। जो लोग जितने बड़े महानकहे जाते हैं वे नारियों का उतना बड़ा शोषक है– जैसे राजा–महाराजा सब नारियों के रूप–लावन्य केआधार पर आशक्त होकर शोषण करता है जो नारी जितना अधिक रूप, गुण, शील, स्वभाव से बड़ी मानीजाती थी, उसका उतना ही ज्यादा शोषण किया जाता था। प्रेमचंद की कहानियों में दलित चेतना भारतीय साहित्य मे दलितसाहित्य जिस रूप से जुडा है, उनसे भारतीय साहित्य को किसी भी रूप मेपृथक नही किया जा सकता दलित साहित्य का इतिहास कोई पुराना नहीं है,यह साहित्य की वह दुःख–ताप और तीक्ष्ण रोष –भरी धारा है जो जीवन केकटु यथार्थ अनुभवों से अनुप्राणित है। दलित चेतना के अन्तर्गत साहित्य कीसभी विधाऐं प्रकाश मे आई है, लेकिन सभी विधाओं में कहानी साहित्य काअभूतपूर्व योगदान रहा है। बीसवीं सदी में विशेष तथा स्वातन्त्रयोत्तर भारत मेविगत पॉच सहस्त्र वर्ष से पीढी दर पीढी हाशिऐं पर रखे गये दलित समाज मेसामाजिक परिवर्तन की जो लहर उडी, शोषण के खिलाफ लडने कीचिनगारियॉ उठी, आत्मसम्मान के प्रति जो भाव जगा , उसके लिये उन्नीसवीसदी के उत्तरार्ध एवं बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में दलित नेतृत्व सक्रिय था। उसकेयोगदान की यशगाथा आसमान पर अंकित हो चुकी थी। देखा जाये तो दलितचेतना का बिखराव सभी भाषाओं मे मिलता है, किन्तु सबसे अधिक दलितचेतना का स्वरूप मराठी साहित्य में पाया जाता है। इसी के साथ–साथ हिन्दीमें भी साहित्य के विविध रूपों के माध्यम से दलित चेतना विकसित हुई।

मूलशब्द: भोगवादी, इतिहास, साहित्य, आसमान, आत्मसम्मान

1. प्रस्तावना

प्रेमचंद जी ऐसे महान साहित्यकार थे जिन्होंने अपने समय की स्थिति का वर्णन बहुतबारीकी से अपने उपन्यास में किया है, उन्होंने अपने उपन्यास में अपने समय की दशा का यर्थातवर्णन हमारे सामने प्रस्तुत किया था। प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में नारी और दलित जीवनका यथार्थ चित्रण हमारे सामने किया है। अपने उपन्यास में उन्होंने नारी और दलितों की जिनसमस्याओं का वर्णन किया है वह समस्याएं हमें किसी न किसी रूप में आज भी दिखाई देती है।भले ही हमारा देश आज आधुनिकता, तकनीकी युग की तरफ बढ़ता जा रहा है परंतु आज भीहमें अनेक समस्याएं अपने आसपास ही दिखाई देती है सोशल मीडिया, समाचार पत्रों औरपत्रिकाओं में महिलाओं का उत्पीड़न और दलितों का सामाजिक अपमान आए दिन छपते रहते हैंया सुनाई देते हैं। सरकार ने अनेक नियम और योजनाएं बनाई है और हमारे संविधान में भीअनेक प्रावधान है परंतु फिर भी महिलाओं और दलितों को अधिक लाभ नहीं हुआ है प्रेमचंद जीने उपन्यासों में नारी जीवन और दलितों के दुख और पीड़ा के साथ–साथ उन्हें दृढ़, शक्ति सेभरा हुआ स्वाभिमानी आत्मसम्मान के लिए लड़ता हुआ भी दिखाया है। प्रेमचंद की नारी औरदलित पात्र सिर्फ शोषण के शिकार नहीं है, वह शोषण के खिलाफ डटकर लड़ना भी जानते हैंवह केवल बेचारे बनकर जीवन व्यतीत नहीं करते हैं बल्कि समाज में सम्मान पाना भी जानते हैंप्रेमचंद जी के उपन्यास जब भी पाठक वर्ग पड़ता है तो उन्हें यह प्रतीत होता है कि यह तोउनकी या उनके आसपास की ही घटना है। जो आज भी वैसे ही घटित हो रही है जैसे प्रेमचंदजी ने वर्णन किया है। प्रेमचंद जी मानव की भावनाओं की छोटी से छोटी बारीकियों से भली भांतिअवगत थे। वे उन्हें ज्यों का त्यों अपने उपन्यासों में उकेरते थे। उपन्यासों में जिस समस्या कावर्णन किया जाता था वह आम जन जीवन की समस्याएं होती है। इसलिए तो उनके कईउपन्यासों पर फिल्में भी बनाई गई। जो

घर–घर में देखी गई। लोगों को समस्याओं के साथ–साथउन समस्याओं से कैसे निपटा जाए इसकी भी जानकारी प्राप्त होती है। 21 वी सदी में आजमनुष्य किसी न किसी समस्या से जूझ रहा है। खासकर दलित और महिलाएं अनेक समस्याओंका सामना कर रहे हैं। नारी आज दहेज प्रथा बाल विवाह, बलात्कार, असमानता, घरेलू हिंसा,और अनमेल विवाह, वेश्यावर्ती, विधवा विवाह, शिक्षा से वंचित कन्या भ्रूण हत्या आदि से प्रताडितहै। आज समय है महिलाओं को सुदृढ़ और स्वाभिमानी बनाने का जिससे देश विकसित होपाएगा। प्रेमचंद ने अपने उपन्यास के माध्यम से महिलाओं को शक्तिशाली और स्वाभिमानी बननेका प्रेरणा दी है। दलित समाज आज भी अपने समान हक के लिए लड़ रहा है जबकि उनकेसमानता के दर्जे का वर्णन तो संविधान में कर दिया गया था, उन्हें अनेक प्रकार के आरक्षण भीदिए गए हैं लेकिन वर्तमान समय में अधिक लोग लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। आज भी हमारे समाजमें ऊँच और नीच के फासले बने हुए हैं। प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में दलित और नारी कीअस्मिता का वर्णन किया है। लोगों को सकारात्मक सोच के लिए जागरूक किया है।

2. समस्या का विवरण

ऐसा देखा जाता है कि शुरू से ही समाज की दृष्टि नारियों केप्रति उपेक्षापूर्ण है। राजा–महाराज की दृष्टि नारी के प्रति भोगमयरही है तो दूसरी ओर धर्म के ठेकेदारों को भी नारियों के प्रतिअच्छा दृष्टिकोण नहीं था। उनका मानना था कि नारी नरक काद्वार है, आत्मोत्थान के विकास में बाधक है। आधुनिक समाज मेंजो कुछ परिवर्तन हुआ है उसमें बहुत कुछ प्रेमचन्द जी के कथासाहित्य का बहुत बड़ा योगदान हैं जहाँ जैनेन्द्र की पात्र मृणालस्वयं घुटकर रह जाती है वही प्रेमचन्द के पात्र झुनिया अपनीअस्मिता की रक्षा के लिए पाखंडी पंडित का पुरजोर विरोध करसफलता प्राप्त कर लेती है। यह प्रसंग आधुनिक नारियों के मुक्तिके लिए एक बहुत बड़ा प्रेरक प्रसंग है।हरहाल प्रेमचंद ने छुआछूत की समस्या, दलितोंके अधिकारों पर डाका डालने, जमींदारों के जुल्म तथादलितों के श्रम की महत्ता को उकेरा है। आप ने दलितोंके संदर्भ में जो कुछ भी लिखा है, मैं अपने समकालीनसाहित्यकारों से आगे बढ़कर लिखा है। आज दलितचेतना के उभार के इस जमाने में भी यदि दलितरचनाकारों की सोच और २ष्टि व्यापक हुई है, तो यहसमय और समाज के अनुरूप मूल्यों का विकास है अतःप्रेमचंद साहित्य दलितों का पक्षधर है न कि सामंतों का।

3. साहित्य की समीक्षा

कुमार, डॉ. (2022). मुंशी प्रेमचंद उन्नीसवीं सदी के दौरान भारत में एक प्रगतिशील लेखक थे। उनकी रचनाएँ जाति, वर्ग, महिलाओं के अधिकार, गरीबी, अंधविश्वास, सामंतवाद और मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों पर पूंजीवाद के हमले जैसे सामाजिक विषयों के इर्द–गिर्द घूमती हैं। आम लोगों के साथ उनके अत्यधिक लगाव के कारण, उन्हें भारत का चार्ल्स डिकेंस माना जाता है। उन्होंने हिंदी और उर्दू में लगभग एक दर्जन से अधिक उपन्यास और तीन सौ लघु कथाएँ लिखी हैं। उनकी रचनाएँ; गबन, गोदान, कर्मभूमि, सेवासदन, मंत्र, नमक का दरोगा, ईदगाह आदि उनकी सामाजिक और सुधारात्मक चिंताओं को उजागर करती हैं। उनका उपन्यास निर्मला, जो बेमेल विवाहों के परिणामस्वरूप युवा लड़कियों के निरंतर उत्पीड़न को रेखांकित करता है, पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय है। यह सोलह वर्षीय निर्मला नामक लड़की के शोषण के इर्द–गिर्द अपना कथानक बुनता है और दर्शाता है कि कैसे उचित दहेज के अभाव में बेमेल विवाह सामान्य रूप से परिवारों को बर्बाद कर देते हैं और विशेष रूप से युवा लड़कियों को भावनात्मक रूप से तोड़ देते हैं। उपन्यास की नायिका अपनी मर्जी से नहीं बल्कि नवविवाहित युवा लड़कियों पर समाज द्वारा थोपी गई मजबूरियों के कारण अपनी दुर्दशा की ओर धकेली जाती है। पितृसत्तात्मक समाज अपने सुचारू संचालन के लिए जो कानून, मानदंड और नियम बनाता है, उन्हें वैध बनाता है और बनाए रखता है, वे कई मामलों में महिलाओं और लड़कियों के लिए दमनकारी बन जाते हैं क्योंकि उन्हें बचपन से ही इन मानदंडों का पालन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। किसी भी समाज के विषम और पक्षपाती ढांचे के कारण होने वाली हिंसा को संरचनात्मक हिंसा कहा जाता है। इसका गुप्त रूप लोगों को उनके जीवन/अस्तित्व की सबसे बुनियादी जरूरतों को पूरा करने से रोकता है। नॉर्वे के समाजशास्त्री जोहान गुल्टुंग ने हिंसा के इस रूप को विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंडों/संरचनाओं की ओर इशारा करते हुए सिद्धांतबद्ध किया है जो ऐसे लोगों की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करते हैं जो खुद को इन संरचनाओं में फिट करने में विफल रहते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र उन सूक्ष्म और व्यवस्थित तरीकों को उजागर करने का एक वास्तविक प्रयास है जिसके माध्यम से उपन्यास की नायिका निर्मला को कई अनुचित सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंडों का शिकार बनाया जाता है।

सिंह, शैलेंद्र. (2020).यह लेख 1920 और 1930 के दशक के सबसे बहुमुखी और लोकप्रिय उर्दू–हिंदी लेखकों में से एक प्रेमचंद की काल्पनिक रचनाओं में महिलाओं के सूक्ष्म और खुले विचारों की जांच करता है. उनके लेखन की एक विस्तृत श्रृंखला को देखते हुए, यह तर्क दिया गया है कि महिलाओं के सवाल के साथ प्रेमचंद के साहित्यिक जुड़ाव को 'रूढ़िवादी' या 'उदारवादी/कट्टरपंथी' जैसे द्विआधारी के माध्यम से संक्षेप में नहीं समझा जा सकता है. जहाँ कुछ कहानियों में सद्गुणी और आज्ञाकारी महिला को घरेलू दायरे में आदर्श के रूप में महत्व दिया गया है, वहीं प्रेमचंद की राष्ट्रवादी शैली की कहानियाँ शहरी, शिक्षित और मध्यम वर्ग की हिंदू महिला के लिए आदर्शों के एक वैकल्पिक सेट को सामने लाती हैं। प्रेमचंद के नारीत्व के चित्रण सूत्रबद्ध होने से कहीं दूर, परिवर्तनशील, अस्थायी और विषयगत रूप से आकस्मिक प्रतीत होते हैं।

के., जयलक्ष्मी. (2016). हिंदी में आधुनिक काल का आगमन 1900 के दशक से माना जाता है. आरंभ में आधुनिक हिंदी साहित्य जादुई और परी कथाओं पर केंद्रित था, जो पाठकों को कल्पना से मनोरंजन करता था. धनपत राय श्रीवास्तव के रूप में जन्मे, उन्होंने "नवाब राय" उपनाम से एक स्वतंत्र लेखक के रूप में अपना करियर शुरू किया, लेकिन जब उनकी कृति 'सोज़–ए–वतन', लघु कथाओं का एक संग्रह ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया और जला दिया, इसके बाद उन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया, जिसका नाम था मुशी प्रेमचंद. प्रेमचंद को आमतौर पर 'भारत का टॉलस्टॉय' कहा जाता है, जिन्होंने हिंदी साहित्य को वास्तविकता में आकार दिया. उन्होंने एक उपन्यासकार, कहानीकार और एक नाटककार के रूप में साहित्यिक विधा पर विजय प्राप्त की, और उन्हें हिंदी आधुनिक साहित्य में 'उपन्यास सम्राट' (उपन्यासों का सम्राट) कहा जाता है. उन्होंने पाठकों के सामने समाज की वास्तविकता को चित्रित करके हिंदी साहित्य जगत को एक नया आयाम दिया. उन्होंने वर्ष 1917 में अपने उपन्यास 'सेवासदन' के साथ हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश किया। उन्होंने 17 उपन्यास और 300 से अधिक लघु कथाएँ लिखीं, जिनमें उस समय के समाज में व्याप्त सामाजिक मुद्दों को दर्शाया गया है। उन्होंने सामंती व्यवस्था, ज़मींदारी प्रथा, गरीबी, सांप्रदायिकता, जाति व्यवस्था और समाज में व्याप्त सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के खिलाफ़ आवाज़ उठाई। उन्होंने समाज में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव

का भी ज़िक्र किया। उन्होंने दहेज प्रथा, विधवा विवाह के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी और कहा कि महिलाओं को सामाजिक बुराइयों और भेदभाव के खिलाफ़ अपनी भावनाओं को सामने लाना होगा। उन्होंने अपने आस–पास के जीवन पर लिखा और पाठकों को उनके आस–पास की सामाजिक संरचना से अवगत कराया। उन्होंने अपनी रचनाओं में आम आदमी को नायक और नायिका का दर्जा दिया और उनकी समस्याओं को दर्शाया। इस तरह उन्होंने हमारे सामने असली भारत को पेश किया। समीक्षा में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि किस तरह प्रेमचंद की रचनाओं ने सामाजिक मुद्दों और गरीबों के संघर्ष के बारे में हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं को प्रभावित किया है और किस तरह पात्रों के माध्यम से बदलाव लाया जा सकता है। प्रेमचंद की रचनाओं में समाज की उन महिलाओं को भी दर्शाया गया है जिन्हें पारंपरिक और आधुनिक महिलाओं में वर्गीकृत किया जा सकता है। वे गरीब से लेकर अमीर, अनपढ़ से लेकर साक्षर तक सभी वर्गों से आती हैं। उन्होंने महिला के मन, उसकी उदारता, निष्ठा और त्याग को बहुत अच्छे से प्रस्तुत किया है। समीक्षक ने सही कहा है कि लेखक ने अपनी कहानियों में सांप्रदायिक सद्भाव और बाल मनोविज्ञान को पूरी तरह से प्रस्तुत किया है। घोष ने उल्लेख किया है कि अंग्रेजी अनुवाद की चयनित कहानियाँ पाठकों के मन में बनी रहेंगी और मूल्यों के पुराने दौर और समय के साथ लुप्त हो चुकी समृद्ध भारतीय संस्कृति को सामने लाएँगी। जगदीश लाल दलवार (1996) के अनुसार उनके लेख "प्रेमचंद की रचनाओं में लोकप्रिय संस्कृति का प्रतिनिधित्व" में लोकप्रिय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को तलाशने की कोशिश की गई है। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने लोकप्रिय संस्कृति को स्वायत्त रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि वे बदलते संबंधों द्वारा चिह्नित संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

4. अध्ययन के उद्देश्य

प्रेमचन्द जी के उपन्यासों में नारी और दलित अस्मिता का अध्ययनकरना।

5. शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रेमचन्द के उपन्यासों की 21वी सदी में समाज में क्या प्रासंगिकता हैका अध्ययन विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि के माध्यम से किया जाएगा। इसमें प्रेमचन्द के उपन्यासनिर्मला, प्रतिज्ञा कर्मभूमि, रंगभूमि गोदान, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम का गहन अध्ययन करके उसकाविश्लेषण किया जायेगा।

विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किसी भी विषय की प्रासंगिक जानकारी के लिए कियाजाता है। शोध करने के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किसी विषय को विश्वसयनीयबनाने के लिए, शोध का समर्थन करने के लिए उनके लिए सबूत को खोजने के लिए किया जाताहैं इसमें पहले से उपलब्ध तथ्यों या सूचनाओं का अध्ययन किया जाता है। इस विधि में पहलेडेटा को एकत्र किया जाता है और जब उन सभी डेटा को एकत्र कर लिया जाता है तो शोधविषय का समर्थन करने के लिए जांच की जाती हैं इससे हमें ठोस प्रकार के साक्ष्य प्राप्त होतेहै। विश्लेषणात्मक शोध विधि से हम किसी भी समस्या के तह तक जा सकते हैं। इस शोध विधिने पहले उपलब्ध डेटा से जानकारी प्राप्त करने के लिए सबसे पहले अपने विषय से सम्बन्धितजानकारी को छाँटा जाता है और ऑकड़ो को व्यवस्थित रूप में रखा जाता है। ताकि शोधकर्ताअपने विषय से सम्बन्धित एक वैध जानकारी तक पहुँच सके। प्रेमचन्द जी के आठ उपन्यासों कागहराई से विश्लेषण करके सूक्ष्म जानकारी एकत्र करूँगी और यह जानने का प्रयास करूंगी किकिस प्रकार से 21वीं सदी में आज भी उनके उपन्यास प्रासंगिक है। इस विधि से नई जानकारीहमें प्राप्त होती है। इससे विषय के विकास में हमें सहायता प्राप्त होती हैं विश्लेषणात्मक विधिका प्रयोग शोधकर्ता निष्कर्षों को अधिक वैधता देने के लिए करता है। इस विधि के द्वारा ही हमेंयह पता चल पाता है कि किसी दावे पर क्यों विश्वास करना चाहिए। यह विधि शोधकर्ताओं केलिए बहुत ही मूल्यवान साबित होती है क्योंकि इससे शोधकर्ता को अपने शोध कार्य में वैधताप्राप्त होती है और वह एक उचित निष्कर्ष पर पहुँच पाता है। इसके द्वारा हमें ''क्यों'' और ''कैसे''प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है।

''विश्लेषणात्मक अनुसंधान एक संगठित और व्यवस्थित अध्ययन है जो कठिन या जटिलघटनाओं को उनके घटकों की जांच करके समझाने, समझने और विच्छेदित करने का प्रयासकरता है। इसने पैटर्न की पहचान करने, सार्थक निष्कर्ष निकालने और अंतदृष्टि' प्राप्त करने केलिए डेटा, तथ्यों या जानकारी का गंभीर रूप से विश्लेषण' करना शामिल है। इसका उपयोगडेटा और साक्ष्य की कठोर परीक्षा और व्याख्या के माध्यम से समझ बढ़ाने के लिए किया जाताहै।'

5.1 तथ्य संकलन के स्रोत

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन के लिए मुख्य रुप से द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है। जिसमें तथ्य संकलन के लिए विभिन्न शोध पत्रों, डेस्क वर्क, पत्र–पत्रिकाएँ, पुस्तक, लेख, आदि के माध्यमों से तथ्यों का संकलन किया गया है।

6. परिणाम एंव चर्चा

6.1 प्रेमचंद की नारी अस्मिता

कथा–सम्राट् प्रेमचन्द का पहला प्रमुख उपन्यास सेवासदन है। 1916 ई. से 1917 ई. में लिखा गयायह उपन्यास पहली बार हिन्दी में प्रकाशित हुआ है। जबकि पहले प्रेमचन्द ने उर्दू में ही लिखा थाऔर इसका नाम रखा था बाज़ार–ए–हुस्न। इस उपन्यास में प्रेमचन्द्र ब्रिटिश–कालीन मध्यवर्गीयसमाज की पिछड़ेपन और रूढ़िवादिता पर चोट की है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास में नारी–मुक्ति केरास्तों की तलाश की है। भारतीय विवाह, विवाह–समस्या, वेश्या–समस्या के प्रति उनका उपन्यासआलोचनात्मक रवैया आख्तयार करने के लिए प्रेरित करता है। इस उपन्यास में खासतौर पर केन्द्रीयकिरदार 'सुमन' के चरित्र का वर्णन किया गया है। वह परिवार और समाज के खिलाफ विद्रोहकरती है। वह स्त्री के आत्मसम्मान का प्रतीक है और इसकी रक्षा के लिए परिवार, समाज औरअपने स्वामी से संघर्ष करती है। नारी के प्रति प्रेमचन्द के दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ने का तत्कालीनकारण यह था कि 1917 ई. में नारियों का पहला प्रतिनिधिमंडल तत्कालीन 'सेक्रेटरी स्टेट ऑफइंडिया' लार्ड मौन्हेरसू से मिला और नारियों के लिए पुरुषों के समान वोट देने के अधिकार की माँगकी। नारियों ने अपने जनसभाएँ आयोजित की और सरकार के पास अपनी माँग पेश की। 1917 ई.के इंडिया नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता एनीवेसेंट ने की थी। इस घटना से प्रभावितहोकर प्रेमचन्द ने 'सेवासदन' में 'सुमन' जैसी पात्र की सृजन की।

मध्यमवर्ग के दिखावटी फिजूलखर्ची के दुश्परिणाम को प्रेमचन्द बार–बार अपनी उपन्यासों औरकहानियों में दिखाते रहे हैं। 'सेवासदन' और 'निर्मला' इस कारण से कुछ ज्यादा ही मिलते–जुलतेउपन्यास है। दोनों उपन्यासों में लड़की के बाप अच्छे पदों पर रहने के बावजूद अपनी लड़की केशादी के लिए कुछ धन संग्रह नहीं करते हैं जिस कारण कन्या को परिवार में मुख्य अधिकार सेवंचित रहना पड़ता है। दिखावटी दहेज के अभाव में उपन्यास 'निर्मला' की पात्र निर्मला और'सेवासदन' की सुमन का विवाह दुत्ती व्यक्ति से हो जाता हैं 'निर्मला' उपन्यास में

उदय भानूलाल कीहत्या हो जाती है और दहेज के अभाव में उसका विवाह–विच्छेद हो जाता है और अंत में तोतारामनामक एक अधेड़ और दुत्ती आदमी से निर्मला का विवाह हो जाता है। जिसका पहले से तीन पुत्रहै– सियाराम, जियाराम और मंसाराम। प्रेमचंद जी ने जब लेखन कार्य आरंभ किया था तब हमारा देश ब्रिटिश सरकार के अधीनथा। उस समय पूरा देश गुलामी का जीवन जी रहा था। उस समय पितृ सत्तात्मक नामक समाजका प्रचलन, नारी को स्वयं कोई भी निर्णय लेने का अधिकार नहीं था। और ना ही घर से बाहरनिकलने की इजाजत, शादी से पहले पिता, पर शादी के बाद पति पर और बुढ़ापे में बेटे परनिर्भर रहना पड़ता था। लेकिन इस दौरान भी कई ऐसी नारी थी जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन मेंबढ़–चढ़कर भाग लिया और जेल भी गई। अपने स्वाभिमान, आत्मसम्मान और समानता की भावनाके लिए लड़ी। लेकिन उस समय बहुत ही कम महिलाएं शिक्षित होती थी, उन्हें घर से बाहर दूरपढ़ने के लिए नहीं भेजा जाता था। 21वीं सदी में भी महिलाओं की स्थिति में कुछ खास परिवर्तननहीं हुआ जितना लग रहा था कि आजादी के बाद नारी की स्थिति भी सुधर जाएगी। ऐसा भीनहीं कहा जा सकता है कि नारी की स्थिति में सुधार हुआ ही नहीं। आज महिलाओं को हरस्थान पर देखा जा सकता है जहां पहले सिर्फ पुरुष का ही वर्चस्व था। महिलाओं का शिक्षा दरभी पहले से बेहतर हुआ है लेकिन फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में ही नहीं शहरी क्षेत्रों में भी नारी कीदशा आज भी पूरी तरह से सुधरी नहीं है। आज भी रात को कोई नारी बाहर निकलती है तोवह अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करती है। कुछ घटिया मानसिकता वाले लोग गिद्ध कीतरह नजरे गड़ाए बैठे रहते हैं। बाहर ही नहीं घर पर भी महिलाओं और बच्चियों की सुरक्षा कोखतरा है। आए दिन बलात्कार और उनकी हत्या की खबरें सुनाई देती हैं। पढ़ी–लिखी महिलाओंके साथ भी घरेलू हिंसा होती है। वह परिवार की मर्यादा बनाए रखने के लिए अपना मुंह नहींखोलती हैं, जीवन भर पीड़ा का सामना करती हैं। कई राज्यों में तो यदि किसी को यह पताचलता है कि गर्भ से कन्या है तो उसे जन्म लेने से पहले ही गर्भ में मार दिया जाता है। लड़कियोंपर इतने प्रतिबंध लगाए जाते हैं कि वह घुट घुट कर अपना जीवन व्यतीत कर देती हैं। पैसोंकी तंगी के कारण बेटियों का अनमेल विवाह कर दिया जाता है दहेज प्रथा के कारण बेटियों कोमानसिक रूप से पीड़ा दी जाती है या जिंदा जला दिया जाता है। बेटी की शिक्षा की अपेक्षा बेटोंकी शिक्षा को ज्यादा महत्व दिया जाता है नौकरी में भी उनके साथ भेदभाव किया जाता है उन्हेंपुरुष की अपेक्षा कम वेतन दिया जाता है जबकि वह काम पुरुष के बराबर करती हैं। बाल विवाहजैसी कुप्रथा आज भी है कहीं जगह पर उन्हें असमानता का सामना करना पड़ता है।प्रेमचंद जी ने अपने कई उपन्यासों में नारी अस्मिता का वर्णन किया है उन्होंने गोदान,कर्मभूमि, सेवासदन, निर्मला, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, गबन आदि उपन्यासों में नारी की समस्याओं केसाथ–साथ उन्हें आत्मसम्मान, सुदृढ़ शक्तिशाली नारी के रूप में भी दिखाया है। 21वीं सदी मेंदहेज प्रथा जैसी कुप्रथा नारी अस्मिता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासनिर्मला में बताया था कि निर्मला के पिता की मृत्यु होने पर जब ससुराल पक्ष वालों को यह पताचलता है कि अब निर्मला की माता दहेज देने के समर्थ नहीं है तो ससुराल पक्ष वाले भी कुछबहाना बनाकर शादी तोड़ देते हैं। मजबूरी में धन के अभाव में निर्मला का विवाह एक अधेड़ उम्रके व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है। इसी प्रकार उनके एक प्रसिद्ध उपन्यास 'सेवा सदन' मेंभी एक पिता को ससुराल पक्ष वालों के दहेज की मांग को पूरा करने के लिए रिश्वत का सहारालेना पड़ता है लेकिन वह रिश्वत लेने में निपुण नहीं होता तो उसे जेल में डाल दिया जाता है।अब उसकी मां भी मजबूरी में सेवा सदन की नायिका सुमन का विवाह एक अधेड़ उम्र के व्यक्तिके साथ कर देती है। जिसकी पीड़ा उसे पूरी जिंदगी भर झेलनी पड़ती है। आज भी अनेकबेटियां इस दहेज जैसी कुप्रथा की बलि चढ़ जाती हैं माता–पिता अपनी बेटी को अच्छा परिवारदेना चाहते हैं, जिससे उनकी बेटी हमेशा खुश रहे इसलिए ससुराल पक्ष वालों को खुश करने मेंलगे रहते हैं। लेकिन दहेज के लालची लोगों का पेट ही नहीं भरता है वह बार–बार कन्या पक्षवालों से दहेज की मांग करते हैं, मजबूर मां–बाप अपनी बेटी की खुशी के लिए अपना घर औरजेवर तक बेच देते हैं लेकिन दहेज के लालाची लोग फिर भी दहेज की मांग उठाते रहते हैं औरजब मां–बाप की दहेज की मांग पूरी करते–करते कमर टूट जाती है तो फिर उनकी बेटी कोमानसिक रूप से प्रताड़ित करते हैं। कई बार तो बेटियां आत्महत्या का सहारा ले लेती हैं ताकिउनके मां–बाप को और ज्यादा कष्ट न सहना पड़े। ना तो मां–बाप खुश रहते हैं और ना ही बेटीइसलिए हर मां–बाप को दहेज न देने की कसम खा लेनी चाहिए, यदि हर माता–पिता यह प्रणलें लेते हैं कि वह अपनी पुत्री का विवाह बिना दहेज के करेंगे तो धीरे–धीरे सभी दहेज मांगनेवाले खत्म हो जाएंगे। कड़े नियम स्वयं को भी निभाने चाहिए और सरकार को भी दहेज लोभीको कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए।

6.2 प्रेमचंद जी के उपन्यासों में दलित अस्मिता

आज हिन्दी साहित्य मे 'दलित साहित्य' अपनी एक पूरी पहचानरखता है। दलित साहित्य एक पूरे विशाल अर्थ एंव समुदाय को लेकर चल रहाहै। "दलित शब्द हमारे लिऐ एक बहुत ही प्रेरणादायक शब्द है। हम इसे दल केसाथ जोडते है, जो सामूहिक तौर पर कार्य करता हैं, जीवन को सामाजिकतरीके से जीता हैं और समाज से अलगाव दूर करता है। इसी के आधार परहमने 'दलित' शब्द को स्वीकार किया हैं।" जिस साहित्य में मनुष्य समाज कीपीडा , दर्द, और कुछ न कर पाने की बेबसी का चित्रण मिलता हैं, वह सबदलित साहित्य हैं। चाहे वह गैर–दलितों द्वारा दलितों के जीवन को लेकर लिखागया हो। यदि कोई गैर दलित साहित्यकार अपने जीवन की पीडा और संवेदनाको एक दलित की तरह व्यक्त करता हैं तो उसे दलित साहित्यकार के बाहर कानही मानना चाहिऐ। इसी सन्दर्भ में दलित कवि, कथाकार 'ओमप्रकाश वाल्मीकि'ने कहा है कि– " रचनाकार मे संवेदनशीलता है और उसकी संवेदनशीलतादलित के साथ हैं और दलित के यथार्थ को वह संवेदनशीलता से प्रस्तुत करताहै तो निश्चित रूप से उसके साहित्य को दलित साहित्य माना जायेगा। ऐसीकई कहानियॉ हैं जिनमें दलित यथार्थ जबर्दस्त रूप से मौजूद हैं।" इनसाहित्यकारों में प्रेमचंद जी का नाम अग्रगण्य हैं , जिन्होंने गैर दलित होते हुऐभी दलितों की वेदना को पूर्णरूपेण अभिव्यक्त किया।

प्राचीन वैदिक काल में हिंदू समाज को वर्ण व्यवस्था में बांटा गया जिसमें चार वर्ण थेब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य इसमें समय के साथ–साथ ब्राह्मण जाति को सर्वश्रेष्ठ समझा जानेलगा और शूद्र को सबसे तुच्छ समझा जाने लगा और उन्हें तीनों वर्णों के सेवक के रूप में कामकरना पड़ा धीरे–धीरे परिस्थितिया और खराब हो गई। शुद्रों में अनेक प्रकार की जाति औरउपजातियों का निर्माण हुआ और इन्हें दलितों की संज्ञा दे दी गई इन्हें वेदों का अध्ययन करनेका कोई भी अधिकार नहीं होता था।65 बाकी वर्णों के लोग उनके साथ छुआछूत जैसे बर्ताव करनेलगे। अगर कोई दलित किसी उच्च वर्ग के सामने से गुजर भी जाता था तो वह अपने आप कोअपवित्र समझने लगते थे और गंगाजल का छिड़काव करते थे अनेक समाज सुधारक दलितों कीसमस्या से अवगत हुए जिसमें ज्योतिबा फुले, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, स्वामी दयानंद ,आदि कानाम प्रमुख रूप से लिया जाता है।

प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में दलितों के जीवन का ही यर्थात चित्र हमारे सामनेप्रस्तुत किया है देश के आजाद होने से पहले दलितों की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। सबसेज्यादा सामाजिक उत्पीड़न के मार्ग पर झेलने वाली जाति दलित थी। उस समय दलितों कोसंपत्ति रखने का कोई भी अधिकार नहीं था उन्हें उच्च वर्ग के रहम व करम पर जीना पड़ता थाकई बार तो उन्हें उच्च वर्ग की झूठन तक खानी पड़ती थी। उन्हें उस कुऐं में से पानी भरने काअधिकार नहीं था जिसमे से सामान्य जन पानी भरते थे। मंदिरों में उनका प्रवेश वर्जित था उन्हेंसामान्य लोगों की तरह शिक्षा देने का भी अधिकार नहीं था उन्हें बहुत ही छोटे–छोटे काम करकेअपने परिवार का भरण पोषण करना पड़ता था, उन्हें उच्च वर्ग के शमशान का उपयोग करने पररोक थी बहुत ही दयनीय स्थिति थी उनके साथ बहुत ज्यादा सामाजिक भेदभाव किया जाता थाउन्हें कोई भी काम मिलने में बहुत समय लग जाता था सभी दलित आर्थिक रूप से कमजोर थे।डॉक्टर अंबेडकर जी भी दलित जाति के थे उन्होंने यह सब पीड़ा खुद झेली थी इसलिए वहदलितों के हक के लिए अनेक आंदोलन करने लगे उन्होंने तो दलितों के लिए अलग निर्वाचनस्थल की भी मांग की लेकिन गांधीजी इस बात के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे क्योंकि वह सबको साथ रखना चाहते थे इसलिए उन्होंने अंबेडकर जी के साथ पूना पैक्ट की संधि की जिसमेंदलितों को आरक्षण देने की बात रखी गई गांधी जी का भी मानना था कि जब तक दलितों केसाथ सामाजिक भेदभाव होता रहेगा तब तक देश कभी ना तो विकास कर सकता है और ना हीदेश को आजादी मिल सकती है इसलिए उन्हें उन्होंने दलितों को समाज में सम्मान दिलाने केलिए उन्हें हरिजन की संज्ञा दी वे चाहते थे कि दलितों को समाज में बाकी लोगों की तरह समानदर्जा मिले वह अपना पेखाना खाना खुद साफ करते थे ताकि भंगी के काम को समाज में इज्जतमिले। वह ऐसा इसलिए करते थे कि पैखाना साफ करने का काम केवल भंगी का नहीं होताबल्कि हर आम इंसान का होता है उन्होंने दलितों का मंदिरों में प्रवेश सामान्य जन के कुएं सेपानी लेने सामान्य जन के साथ शिक्षा ग्रहण करने के लिए अनेक सत्याग्रह आंदोलन चलाए।वह दलित को छुआछूत के पाप से मुक्त करना चाहते थे प्रेमचंद जी गांधीवादी विचारधारा से बहुतज्यादा प्रभावित हुए दलितों की पीड़ा से बहुत आहत थे और चाहते थे कि दलित समाज में अपनासर उठाकर आत्मसम्मान से जी सके इसलिए उन्होंने अपने उपन्यास में दलितों के जीवन काकिरदार चित्र और हमारे सामने प्रस्तुत किया है उनका हृदय मानवता के लिए धड़कता था वहकी भी पीड़ा नहीं देख पाते थे इसलिए उन्होंने दलितों की पीड़ा को अपने उपन्यासों में दर्शायाहै और साथ ही साथ उन्होंने अपने दलित पात्रों को अन्य के खिलाफ आवाज उठाते हुए दिखायाहै देश को आजादी मिलने के बाद सबसे पहले दलितों की समस्या को ध्यान में रखते हुए हमारेसंविधान में दलितों के लिए आरक्षण की सुविधा का प्रावधान रखा गया है अगर दलितों के साथसामाजिक भेदभाव किया जाता है तो सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। लेकिन फिर भी 21वीं सदीमें दलितों की स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं आया है दलितों को आज भी सामाजिक भेदभाव औरअपमान का सामना करना पड़ता है भारत में लगभग 16.6 परसेंट जाति दलितों की है संविधानके द्वारा इतने प्रावधान बनाने पर भी दलितों को बुनियादी अवसर भी प्राप्त नहीं होते है बल्किआज भी ऊंच और नीच जाति का भेदभाव बना हुआ है दलित आज भी शोषण और अत्याचारका शिकार बने हुए हैं। पिछड़े और ग्रामीण इलाके में बेरोजगारी और गरीबी बहुत अधिक है अपनेही देश में दलित आज कर्ज में डूबे हुए हैं और यदि कर्ज नहीं चुका पाता है तो उन्हें बंधुआमजदूरों के रूप में काम कराते हैं। आज भी दलित शौचायलयों को साफ करने, सड़कों पर झाड़ूलगाने और कचरा उठाने का काम करते हैं जिन्हें लोग नीच जाति का काम समझते हैं।

सरकार ने आरक्षण तो उन्हें मुहैया करा दिया लेकिन शिक्षा की उचित व्यवस्था नहीं की।दलित को प्राथमिक तक की शिक्षा मिली लेकिन गरीबी के कारण वह लोग उच्च शिक्षा तक नहींजा सके और इसी कारण उच्च पद की नौकरियों में बहुत कम देखने को मिलते हैं। ज्यादातरदलित डी ग्रेड की नौकरियों में ही लगे हुए हैं आज उच्च जाति के मुकाबले दलितों के उच्चशिक्षा हासिल करने की दर बिल्कुल आधी है। 1991 के बाद उदारीकरण के कारण सरकारीनौकरी में बहुत कमी आई है। सरकार को दलितों को उच्च शिक्षित करने के कदम उठानेपड़ेंगे। दलितों को राजनीतिक दल केवल वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल न करें। दलित यदिअपने नेतृत्व के लिए किसी दलित नेता का चुनाव कर भी लेता है तो भी कुछ समय के बाद वहनेता अपनी जेब भरने के बारे में सोचने लगता है और दलितों को वोट हासिल करने का मोहराबनाए रखता है। 21वीं सदी में भी हमें देखने के मिल जाता है कि दलितों को आज भी कईजगह प्रवेश नहीं करने देते हैं। उनका सामाजिक बहिष्कार करते हैं और आज भी नौकरी में भर्तीप्रक्रिया में भी जातिगत भेदभाव होता है।

जरूरत है जातिगत भेदभाव मिटाने की। प्रेमचंद जी चाहते थे कि समाज में दलित वर्गभी सम्मान से जिये, उनके साथ कोई भेदभाव ना हो। तभी हमारा देश विकसित देशों की श्रेणीमें आ पाएगा। सरकार दलित नेता समाज, कल्याण मंत्रालय और समाज सबको साथ मिलकरजातिगत भेदभाव को मिटाना होगा।

7. निष्कर्ष

प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य (1908–1936 ई.) द्वारा नारी की दयनीयता का चित्रण कर उन्हें इससेऊपर उठने के लिए नई सोच एवं नई दिशा प्रदान की ।प्रारंभ में लेखक ने सिर्फ नारी समस्याओं काचित्रण किया है। लेकिन धीरे धीरे नारियों का मुखर, जागरुक एवं विकासात्मक रूप दिखलाई पड़ताहै। जो जरूरत पड़ने पर समाज की रूढ़ियों आडंबरों आदि का खुलकर विरोध करती हैं। सक्रियराजनीति में भी अपना दबदबा रखती हैं। किंतु प्रेमचंद का नारी जागरण कहीं भी पाश्चात्य काअंधानुकरण नहीं करता । प्रेमचंद का उद्देश्य था नारियों की समस्याओं से परिचित कर उन्हेंजागरुक एवं सचेत करना ताकि वे अपने प्रतिष्ठा की लड़ाई खुद लड़ सकें। जहां आधुनिक काल मेंभी नारियों को केवल अबला एवं श्रद्धा से सम्मानित कर मानवता की परिधि से ही निष्कासित करदिया जाता है। आज भी स्त्रियां मानसिक एवं जैविक स्तर पर शोषित होती हैं।प्रेमचंद के साहित्य में आये अस्पृश्य पात्र बडेजोरदार व धारदार है। 'कफन' कहानी का नायक अस्पृश्यतबके का है और वे जिस धर्म का मखौल उडाते है, वहब्राह्मण धर्म है। 'कफन' के घीसू–माधव में श्रम के प्रतिअलगाव की भावना है। जिसकी वजह यह बतायी गयी हैकि जिस समाज में हाडतोड मेहनत करने वालो कीहालत घीसू–माधव से बेहतर न हो, उसमें ऐसी मनोवृत्तिका पैदा हो जाना कोई आश्चर्य की बात नही है। इसकेविपरीत घीसू माधव कहते है कि जो " धर्म जीवितों कोभूखा मारे और मरे हुये को नया कफन दें, वह अमानवीयऔर परित्याज्य है।"

8. सन्दर्भ

1. अमृतराय, कलम का सिपाही, इलाहाबादः हंस प्रकाशनय 1976.
2. अमृतराय, प्रेमचंद की प्रासंगिकता, इलाहाबादः हंस प्रकाशनय 1992.
3. अरविंदाक्षन ए. प्रेमचंद के आयाम, नई दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशनय 2006.

4. आप्ट, संस्कृत कोश, वाराणसीः मोतीलाल बनारसीदासय 1973.
5. आचार्य निशांतकेत, गोदानः परिशीलन, नई दिल्लीः संजय प्रकाशनय 2006.
6. उपाध्याय मृत्युंजय, प्रेमचंदः विचार और विवेचन, वाराणसीः किशोर विद्या निकेतन.
7. ओड लक्ष्मीलाल के. शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुरः हिंदी ग्रंथ अकादमी, राजस्थानय 2009.
8. कुमार राजेंद्र, प्रेमचंद की कहानियाँः परिदृश्य और परिप्रेक्ष्य, अभिव्यक्ति प्रकाशनय 1993. च. 60.
9. कुमार जैनेन्द्र, प्रेमचंद एवं कृति व्यक्तित्व. दिल्लीः पूर्वोदय प्रकाशनय 1967.
10. कलार्थी नवीन, हिंदी–गुजराती उपन्यासों में गांधीवाद, कानपुररू ज्ञान प्रकाशनय 2003.
11. कमल एमपी, बेटियाँ (अजन्मी, अवांछित), नई दिल्लीः कीर्तिमान प्रकाशन, दरियागंजय 2007.
12. कथा सम्राट प्रेमचंद, आजकल में प्रकाशित चुनिंदा आलेखों का संकलन. नई दिल्लीरू प्रकाशन और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकारय 2005.
13. कोठारी कोमल, विजयदान देथा, प्रेमचंद के पात्र, अक्षर प्रकाशनय 1970.
14. कोठारी अनीता, हिंदी साहित्य एवं साहित्यकार, भाग 2. जयपुरः मार्क पब्लिशर्सय 2010.
15. गायकवाड ज्योति, प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी पात्रों का चित्रण, कानपुरः साहित्यरत्नाकरय 2018.
16. गोयनका कमल किशोर, प्रेमचंदः संपूर्ण दलित कहानिया, नई दिल्लीः सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशनय 2014.
17. गोयनका कमल किशोर. प्रेमचंदः संपूर्ण दलित कहानियाँ, नई दिल्लीः सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशनय 2014.
18. गोयनका कमल किशोर, प्रेमचंद, नई दिल्लीः साहित्य अकादमीय 2013.
19. गोयनका कमल किशोर, प्रेमचंद अध्ययन की नई दिशाए, दिल्लीः साहित्य निधि प्रकाशनय 1981.
20. गोपाल मदन, कलम का मजदूर प्रेमचंद, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशनय 2010.
21. गुरु राजेश्वर, गोदान, नई दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशनय 2010.
22. गुप्ता एमएल, शर्मा डीडी. भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र. आगराः साहित्य भवनय 1983.
23. गुप्ता कुमारी प्रमिल, प्रेमचंद और हरिनारायण आप्टे के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन. नई दिल्लीः अशोक प्रकाशनय 1970.
24. गुडे वसुंधरा नरदेव, प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी समस्याएँ, नई दिल्लीः अयन प्रकाशनय 2008.
25. धाटे अर्चना विश्वंभर, प्रेमचंद का कथा–साहित्यः दलित चिंतन का परिप्रेक्ष्य. कानपुरः अमन प्रकाशनय 2014. च. 42.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.